IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चतर माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके अधिगम शैली के सन्दर्भ में अध्ययन

किरन आर्या[1] डॉ. रेनू रावत[2]

1- पी. एच डी. (शिक्षाशास्त्र) एम. बी. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी,कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

2- असिस्टेंट प्रोफेसर बी.एड. विभाग एम. बी. राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी

सार – किसी भी कार्य को अधिगम द्वारा ही सीखा जा सकता है जिसमें अधिगम के अलग-अलग तरीके सम्मिलित हो सकते है। अधिगम शैली किसी व्यक्ति की सीखने की विभिन्न पसंदीदा तरीके हैं जिन्हें किसी कार्य को सीखने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को उत्कृष्टता प्रदान करने में सहायक होती हैं। प्रस्तुत शोध वर्ष 2023-24 में जनपद नैनीताल के उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विधार्थियों पर किया गया है। इसमें विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अधिगम शैली के मध्य सम्बन्ध तथा दोनों चरों के बीच के अंतर का अध्ययन किया गया है। शोध में कक्षा 12वीं में अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के कुल 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयनित किया गया है। निर्धारित उद्देश्यों व परिकल्पनाओं की जांच करने हेतु सांख्यिकीय परिगणना में टी-परीक्षण तथा पियर्सन सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है। अधिगम शैली के तीन आयामों सक्रिय, आकृतिगत एवं शाब्दिक अधिगम शैली का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया है। शोध के निष्कर्ष में कला व विज्ञान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अधिगम शैली में सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्यबिंदु – अनुसूचित जाति, शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम शैली।

प्रस्तावना – सीखने से किसी व कार्य को किया जा सकता है यह उपलब्धि का एक मार्ग तैयार कराती है। अधिगम शैली के संप्रत्यय की उत्पत्ति 334 ईसा पूर्व में अरस्तु के द्वारा दिए गए विचारों से मानी जाती है। उनके द्वारा दिए गए सिद्धांत "प्रत्येक बच्चे में विशिष्ट प्रतिभाएं और कौशल होते हैं" अर्थात बच्चे विभिन्न क्षमता तथा विभिन्नताओं के साथ बड़े होते हैं इन्हीं से सीखने की शैलियों की अवधारणा का निर्माण हुआ। जिस पर सभी विद्वानों, शोधकर्ताओं ने अपने-अपने सिद्धांतों का निर्माण किया, जो आज वर्तमान में हमें शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग में दिखाई देते हैं। **अलाबिली (1993)** विद्यार्थियों की गहन और विस्तृत अधिगम की प्रक्रिया, उनके सीखने के दो शैलियों के मध्यवर्ती अवधारणा है। जो उनके शैक्षिक प्रदर्शन के लिए निर्धारित की गई हैं। व्यक्ति

जीवन में लगातार सीखने का प्रयास करता रहता है। **जलील और थॉमस (2019)** अधिगम शैली एक ऐसी अभिन्न अवधारणा है जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके संज्ञानात्मक पक्षों से जोड़ती है। व्यक्ति तार्किक तथा अनुभावात्मक तरीके से सीखने का प्रयास करता है जिसमें व्यक्ति की इंद्रियों का मस्तिष्क के साथ तालमेल की प्रक्रिया से अधिगम कार्य होता है। इन्हीं के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया जा सकता है। पांच इंद्रियों में से आंख, कान, त्वचा व्यक्ति की सीखने की शैली को बनाने में सबसे अधिक सहायक होती है। सीखने की शैली, विशेषताओं, दृष्टिकोण और व्यवहारों का एक समूह है जो हमारे अधिगम के तरीके को परिभाषित करती है। अधिगम शैली एक रणनीति की तरह कार्य करती है जिसमें हमारा दिमाग सूचनाओं को इकट्ठा कर प्रयोग में लाता है। सीखने की शैली उन सभी अलग-अलग तरीकों रणनीतियों को एकत्र तथा वर्गीकृत करती है जिनसे लोग यह सीख पाते हैं कि किसी तथ्य या जानकारी तक कैसे पहुंच सकते हैं। अपनी स्वयं के अधिगम शैली को पहचानने और समझने से बेहतर तकनीकों का उपयोग से अधिगम को प्रभावी बनाया जा सकता है। जिससे अधिगम की गुणवत्ता व गति में निरंतर वृद्धि की जा सकती है। **क्लेविड़ो (2024)** के अनुसार पढ़ाने और सीखने की शैलियों की अवधारणा से पता चलता है कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। हर शिक्षक अपने तरीके से पढाता है और हर विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार सीखता है। **मिश्रा (2012)** अधिगम शैली वरीयता व्यक्ति की सीखने की राह को निर्देशन देती है। इससे पसंदीदा अधिगम शैली को प्रयोग में लाना सीखते है। यह सामान्य सीखने के समूह है जिनसे लोग सीखते है। मुख्य अधिगम शैलियाँ है -

(I). सक्रिय पुनरुत्पादन – यह क्रिया आधारित मूर्त अनुभवों के लिये व्यक्ति की प्राथमिकता को दर्शाता है। इनमें अनुकरण और अभ्यास पर जोर दिया जाता है, यह पुनरुत्पादन उन्मुख है।

(II). सक्रिय रचनात्मक – यह क्रियात्मक सूचना के प्रसंस्करण के आधार पर अपने अनुभवों की संकल्पनों को प्राथमिकता देने को इंगित करता है।

(III). आकृतिगत पुनरुत्पादन – यह आरेख, चार्ट, चित्र, मानचित्र और फोटोग्राफ बनाने से सम्बंधित दृश्य अनुभवों के लिए किसी प्राथमिकता को संदर्भित करता है। इसमें अनुकरण और अभ्याश पर जोर दिया जाता है। यह पुनरुत्पादन उन्मुख है।

(IV). आकृतिगत रचनात्मत्क – यह आकृतिगत अनुभवों के प्रसंस्करण के लिए वरीयता को संदर्भित करता है जो संकल्पनाओं को जन्म देगा।

(V). शाब्दिक पुनरुत्पादन – यह शब्दों के माध्यम से संप्रेषित विषय – वस्तु से सम्बंधित लिखित या शाब्दिक जानकारी को संदर्भित करता है।

(VI). शाब्दिक रचनात्मक – यह विषयवस्तु के बारे में चिंतनशील, समायोजनात्मक और अमूर्त सोच को प्राथमिकता देने से सम्बंधित हों ताकि संकल्पनाएँ विकसित की जा सकें। प्रस्तुत शोध में दो अधिगम शैलिओं का एक संयोजित रूप में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों पर किया गया है यह एक ऐसा वर्ग है जिसमें भारतीय संविधान द्वारा निर्धारित अनुसूचित की गयी जातियां आती है जिनका अपना एक शोषित इतिहास रहा है और शिक्षा से ही समाज में शोषित वर्गों का उत्थान किया जा सकता है। एन ई पी 2020 में अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की शिक्षा के

लिए कुछ सुझाव इस प्रकार दिए गये है – अनुसूचित जातियों के बच्चों की पहुँच, भागीदारी और अधिगम परिणामों में परिवर्तन, नामांकन शैक्षणिक विकास में असमानताओं को दूर करने पर विशेष ध्यान, विद्यालयी शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने का प्रयास, मेधावी छात्र छात्राओं के लिए बड़े पैमाने पर समर्पित क्षेत्रों में विशेष छात्रावास, ब्रिज पाठ्यक्रम और फीस माफ़ करने तथा छात्रवृति, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर वितीय सहायता देना है ताकि उच्च शिक्षा का मार्ग प्रशस्त हो पाए।

शोध की आवश्यकता – अधिगम द्वारा किसी भी कार्य को किया जा सकता है। सीखने की विभिन्न शैलियों से व्यक्ति निर्धारित कार्य को बेहतर तरीके से सीख सकता है। विधार्थियों के जीवन में इन विभिन्न शैलियों का प्रयोग शैक्षिक स्तर को उत्कृष्ठ बनाने में मदद करता है। इसीलिए यह आवश्यक है कि बच्चों की अधिगम वरीयताओं को ध्यान में रखा जाये और उन्हें अधिगम शैलियों की जानकारी के प्रति जागरूक किया जाये। ताकि वह बेहतर तरीके से सीख सके तथा सामाजिक एवं शैक्षिक स्तर को बेहतर बनाने पर ध्यान दें। अधिगम शैली की शिक्षा में आवश्यकता को केंद्र में रखते हुए उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अधिगम शैली का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के सक्रिय अधिगम शैली प्राप्त कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अंतर का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के आकृतिगत अधिगम शैली प्राप्त कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अंतर का अध्ययन करना।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के शाब्दिक अधिगम शैली प्राप्त कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अंतर का अध्ययन करना।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

❖ **शोध की परिसीमा –**

1. प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष केवल उत्तराखण्ड के जनपद नैनीताल तक ही सीमित हैं।
2. शोध में वर्ष 2023-24 में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 वीं में अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के कुल 200 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. शोध में विधार्थियों की केवल सक्रिय, आकृतिगत, शाब्दिक अधिगम शैली व शौक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन –

रोहतेश (2021) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली का अध्ययन उनके अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, अभिसारी चिंतन तथा जीवन कौशल नियंत्रण के संदर्भ में अध्ययन किया। कक्षा 12वीं के 407 विद्यार्थियों पर हुए शोध में पाया गया कि जीवन कौशल का अधिगम शैली के मध्य सार्थक सहसंबंध व अंतर्मुखी और बहिर्मुखी बच्चों की अधिगम शैली में सार्थक अंतर पाया गया। **सहिन और अन्य, (2023)** ने अधिगम शैली चक्र की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से मस्तिष्क आधारित सीखने की शैली चक्र की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। 111 विद्यार्थियों में 84 महिला व 27 पुरुष पर हुए इस शोध में पाया कि विद्यार्थियों का मस्तिष्क आधारित अधिगम मॉडल के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। **क्लेविड़ो (2024)** ने शिक्षकों की पढ़ाने की शैलियों और विधार्थियों की सीखने की शैलियों और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच सम्बन्ध का अध्ययन के लिए 6 ग्रेड के 27 शिक्षकों और कक्षा 6 के 208 बच्चों को प्रतिभाग कराया। परिणामस्वरूप शिक्षकों और विद्यार्थियों की सीखने की शैलियों व विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया। अधिगम शैली वरीयता के साथ शैक्षिक प्रदर्शन को संभावित रूप से बढाया जा सकता है।

शोध परिकल्पना –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सक्रिय अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् आकृतिगत अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् शाब्दिक अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शोध अभिकल्प – शोध में सर्वेक्षण शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं विधि - प्रस्तुत शोध कार्य के लिये जनपद नैनीताल के सरकारी विद्यालयों के उच्चत्तर माध्यमिक स्तर कक्षा 12 वीं में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के 200 विद्यार्थियों (100 कला एवं 100 विज्ञान वर्ग) को यादृच्छिक शोध विधि द्वारा शामिल किया गया है।

शोध उपकरण – शोध अध्ययन में निम्न शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है –

1. अधिगम शैली (के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित)।
2. शैक्षिक उपलब्धि का मापन विद्यार्थियों के प्राप्तांको द्वारा किया गया है।

संख्यिकीय परिगणना –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

	विषय वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता स्तर	सार्थकता (.05)
शैक्षिक उपलब्धि	कला	100	278.26	36.14	2.20	198	सार्थक
	विज्ञान	100	296.8	43.76			

सारणी संख्या - 01

उपरोक्त सारणी संख्या 01 में सार्थकता स्तर 0.05 व स्वतंत्रता स्तर (df) 198 पर विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। सारणी में कला व विज्ञान वर्ग के अनुसूचित जाति के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का विवरण दिया गया है। कला के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 278.26 व मानक विचलन 36.14 है। विज्ञान वर्ग के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 296.8 व मानक विचलन 43.76 है। दोनों वर्गों के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है। कला की तुलना में विज्ञान वर्ग की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी है। आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर क्रांतिक मान 1.96 में टी परीक्षण का मान **T= 2.20** अधिक होने पर शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है। आंकड़ों में सांख्यिकीय तौर पर सार्थक अंतर है। अधिकतर विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालय के बाद पढाई के लिए अतिरिक्त शिक्षण कार्यों पर अधिक समय देते हुए पाया गया। जिसमें समूह अध्ययन (ग्रुप स्टडी), ऑनलाइन स्टडी तथा ट्यूशन आदि शामिल है इसीलिए बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर प्राप्त हुआ है।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

	विषय वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रता स्तर	सार्थकता (.05)
अधिगम शैली	कला	100	126.93	27.9	3.99	198	सार्थक
	विज्ञान	100	142.82	28.5			

सारणी संख्या – 02

सारणी संख्या 02 में उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अधिगम शैली के स्तर को दर्शाया गया है। सार्थकता स्तर 0.05 व स्वतंत्रता स्तर (df) 198 पर कला विधार्थियों की अधिगम शैली का मध्यमान 126.93 व मानक विचलन 27.9 है। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का मध्यमान 142.82 और मानक

विचलन 28.5 है। सांख्यिकीय परिगणित टी परीक्षण का मान T = 3.99 है जो क्रांतिक मान 1.96 से अधिक है। जिस आधार पर शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है। दोनों वर्गों की अधिगम शैली में सार्थक अंतर हैं। कला की तुलना में विज्ञान वर्ग की अधिगम शैली अधिक उच्च पायी गयी है। विद्यालयों में विज्ञान वर्ग के बच्चों के लिए प्रैक्टिकल शिक्षण विधियों पर ज्यादा फोकस किया जाता है। कई शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है, जिससे बच्चों को सीखने और समझने के विस्तृत क्षेत्र प्राप्त होते है।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सक्रिय अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

	सक्रिय अधिगम शैली वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मान	स्वतंत्रता स्तर	सार्थकता (.05)
शैक्षिक उपलब्धि	कला	38	261.1	23.47	4.0	74	सार्थक
	विज्ञान	38	311.10	48.66			

सारणी संख्या – 03

सारणी संख्या 03 में कला व विज्ञान वर्ग के सक्रिय अधिगम शैली वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। सार्थकता स्तर 0.05 व स्वतंत्रता स्तर (df) 74 पर सक्रिय अधिगम शैली वाले कला वर्ग के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान 261.1 और मानक विचलन 23.47 है। सक्रिय अधिगम शैली वाले विज्ञान के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान 311.10 और मानक विचलन 48.66 है। सांख्यिकीय परिगणना में टी परीक्षण का मान 4.0 पाया गया है जो कि क्रांतिक मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त किया गया है। सक्रिय अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर सार्थक है। सक्रिय अधिगम शैली वाले विज्ञान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी। सक्रिय अधिगम शैली विद्यार्थी के कक्षागत कार्यों में सीखने की गति को बढ़ाने में सहायक होती है। विज्ञान वर्ग के बच्चों में क्रियाशीलता, वैज्ञानिक चिंतन का भाव अधिक पाया गया जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में अंतर है।

4. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् आकृतिगत अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

	आकृतिगत अधिगम शैली वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	स्वतंत्रता स्तर	सार्थकता (.05)
शैक्षिक उपलब्धि	कला	28	297.18	48.72	-0.054	66	असार्थक
	विज्ञान	40	296.6	43.76			

सारणी संख्या – 04 :

सारणी संख्या 04 में सार्थकता स्तर 0.05 व स्वतंत्रता स्तर (df) 66 पर कला के आकृतिगत अधिगम शैली वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान क्रमशः 297.18 मानक विचलन 48.72 है। विज्ञान के आकृतिगत अधिगम शैली वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान 296.6 और मानक विचलन 43.76 है। परिगणना में टी मान **-0.054** पाया गया है जो क्रांतिक मान

1.98 से कम है। जिस आधार पर शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं होती है। अतः आकृतिगत अधिगम शैली वाले दोनों वर्गों के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है। बच्चों में आकृतिगत अधिगम शैली की वरीयता प्राथमिक है। विद्यार्थियों में सीखने की यह एक सामान्य शैली है। बच्चे आकृतियों द्वारा अपने घर-परिवार तथा सामाजिक परिवेश में बचपन से ही कुछ न कुछ सीखते हैं। यहाँ तक की प्राथमिक शिक्षा की शुरुवात भी इसी के द्वारा दी जाती है। इसीलिए यह उपलब्धि प्राप्त करने में दोनों वर्गों में समान ही पायी गयी है।

5. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् शाब्दिक अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शैक्षिक उपलब्धि	शाब्दिक अधिगम शैली वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मान	स्वतंत्रता स्तर	सार्थकता (.05)
	कला	34	281.85	26.49	2.0	54	असार्थक
	विज्ञान	22	276.36	16.28			

सारणी संख्या – 05 :

सारणी संख्या 05 में उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् शाब्दिक अधिगम शैली वाले कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। सार्थकता स्तर 0.05 व स्वतंत्रता स्तर (df) 54 पर कला के शाब्दिक अधिगम शैली वाले विधार्थियों की औसत शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान 281.85 व और मानक विचलन 26.49 है। विज्ञान वर्ग के शाब्दिक अधिगम शैली वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान 276.36 और मानक विचलन 16.28 है। सांख्यिकीय परिगणना में टी-परीक्षण का मान 0.87 पायी गयी है जोकि क्रांतिक मान 2.00 से कम है जिस आधार पर शून्य परिकल्पना निरस्त नही होती है। सभी बच्चों को विद्यालयी शिक्षण में भाषा और शब्दों पर अधिक ध्यान केन्द्रित्त करते हुए पाया गया है जिस कारण शाब्दिक अधिगम शैली वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही है।

6. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होता है।

शैक्षिक उपलब्धि एवं अधिगम शैली	संख्या	स्वतंत्रता स्तर	पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
	200	198	0.4	सार्थक

सारणी संख्या 06

सारणी संख्या 06 में सार्थकता स्तर 0.05 स्वतंत्रता स्तर (df) 198 पर विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के मध्य सहसंबंध को दर्शाया गया है। जिसमें सांख्यिकीय परिगणना में पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक (r) द्वारा सम्बन्ध को जांचा गया है। विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर पियर्सन सहसम्बन्ध गुणांक (r) का मान 0.4 प्राप्त हुआ है जो कि क्रांतिक मान .195 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया है।

निष्कर्ष -

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के कला व विज्ञान के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया है।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के कला व विज्ञान के विधार्थियों की अधिगम शैली में अंतर पाया गया है।

3. कला व विज्ञान वर्ग के सक्रिय अधिगम शैली प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया है।

4. कला व विज्ञान वर्ग के आकृतिगत अधिगम शैली प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5. कला व विज्ञान वर्ग के शाब्दिक अधिगम शैली प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

6. उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व अधिगम शैली के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया है। अर्थात अधिगम शैली के बढ़ने पर शैक्षिक उपलब्धि भी बढती है।

अधिगम शैली बच्चे की वह रणनीतियां है जिसमें सक्रियता, आकृतियाँ, शब्दावली, अनुभव व कर के सीखने की क्षमता को अनुपयोग में लाया जाता है। विभिन्न प्रकार के पसंदीदा तरीके बच्चों को अपने शैक्षिक लक्ष्यों, उपलब्धि और प्रदर्शन को बेहतर बनाने में सहायक होते है। इसीलिए दोनों चरों में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। एन ई पी- 2020 में हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास की बात की गयी है जिसमें शिक्षकों व अभिभावकों को विद्यार्थियों की क्षमताओं के प्रति संवेदनशील होना जरूरी समझा गया है। अधिगम शैलियाँ भी इन्ही के अंतर्गत निहित है।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थसूची –</u>

आर्या. के. (2025); उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके उपलब्धि अभिप्रेरणा के सन्दर्भ में अध्ययन IJFMR UGC Refereed Peer Reviewed Multidisciplinary Journal vol. 07 issue 01 Jan-Feb 2025, ISSN- 2582-2160 www.ijfmr.org.in

अलाबिली, (1993); "इन्फेर्रेड हेमिस्फेरिक थिंकिंग स्टाइल्स, जेंडर एंड अकेडमिक मेजर अमंग यूनाइटेड अरब एमिरेट्स कॉलेज स्टूडेंट्स परसेपचुअल एंड मोटर स्किल" वॉल्यूम 76 पेज नंबर 971-977. www.google.in

क्लेविड़ो, जी., (2024); 'द टीचिंग स्टाइल्स एंड पुपिल्स लर्निंग स्टाइल्स: दियेर रिलेशनशिप विथ पुपिल्स अकेडमिक परफॉरमेंस', स्प्रिन जर्नल ऑफ़ आर्ट्स, हुमानिटिज एंड सोशल साइंसेज वॉल्यूम 03, इशू 02, फरवरी 2024 पेज 11-15

जलील, एस. एंड थॉमस, ए. एम. (2019); "लर्निंग स्टाइल्स थेओरिस एंड इम्प्लीमेंटेशन for टीचिंग लर्निंग" होराइजन रिसर्च पब्लिकेशन (यू.एस.ए.) आईएसबीएन 978-1-943484-25-6 पेज 43-49. www.google.in

मिश्रा, के. एस., (2012); "लर्निंग स्टाइल्स इन्वेंटरी" नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन, आगरा

रोहतेश, (2021) ; "अकेडमिक अचीवमेंट एंड लर्निंग स्टाइल्स ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू एक्सट्रोवर्जन इंट्रोवर्जन, डाइवरजेंट थिंकिंग एंड लोकस ऑफ़ कण्ट्रोल" महर्षि दयानंद सरस्वती यूनिवर्सिटी, रोहतक www.shodhganga.in

सिंग, आर., (2020): "ए स्टडी ऑफ़ अचीवमेंट मोटिवेशन अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर लर्निंग स्टाइल्स, स्कूल एनवायरनमेंट एंड सेल्फ कांसेप्ट" www.shodhganga.in

साहिन, एस. et. al., (2023); "द इफेक्टिवनेस ऑफ़ द ब्रेन लर्निंग स्टाइल्स साइकिल" जर्नल ऑफ़ एक्सीलेंस इन् एजुकेशन, वॉल्यूम 12, इशू 1, 2023. www.jee.in, www.google.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : मानव संसाधन विकास मंत्रालय

INTERNET SITES -

www.googlescholar.in

www.researchgate.in

www.google.in

www.education.gov.in